International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939

महादेवी के गीतों में प्रकृति–चित्रण

प्रदीप देशवाल
मकान न0 383, पुराना हाऊंसिग
बोर्ड कालोनी, रोहतक

श्रीमती महादेवी वर्मा छायावादी काव्य–धारा व रहस्यवाद की कवयित्री थी। उनका जन्म 1907 में उत्तर प्रदेश के फरूर्खाबाद शहर में हुआ था। इनके पिता का नाम गोविन्द प्रसाद और माता का नाम हेम रानी था। उनके पिता कॉलेज के प्रधानाध्यापक थे और माता भी विदुषीं थी। उन्होनें 17 वर्ष की आयु में मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। 11 वर्ष की आयु में इनका विवाह हो गया था। बाद में इन्होंने इण्टर, बी. ए. व संस्कृत में एम. ए. की थी।[1]

महादेवी वर्मा महात्मा बुद्ध के जीवन से बहुत प्रभावित थी। उनके दुःखवाद का महादेवी वर्मा पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। वह महात्मा बुद्ध से प्रभावित होकर बौद्ध भिक्षुणी होने को तैयार हो गई थी। परन्तु उनके परिवार ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया।[2]

महादेवी वर्मा भारतीय गीत परम्परा से अच्छी तरह परिचित रही है। बचपन से ही उन्हें संगीत की शिक्षा दी गई थी। उन्होंने अनेक गीतों की रचना की है। इनकी समस्त काव्य धारा मुक्तक गीतों के रूप में प्रवाहित हुई है। उनका कहना है कि मनुष्य के जीवन में जब सुख–दुख बढ़ जाते है तो वह इसकी अभिव्यक्ति गीतों के माध्यम से करता है। इनके गीतों में प्रकृति के व्यापारों की छाया व परमात्मा का मिलन–विरह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इनके गीतों में पीड़ा व वेदना स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। इनके समस्त काव्य वेदनामय है।

महादेवी वर्मा ने अपनी पीड़ा को प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से व्यक्त किया है। प्रकृति मानव–मस्तिष्क की तुष्टि का एक प्रधान साधन है। महादेवी वर्मा प्रकृति को हमेशा चिरसंगी के रूप में देखती थी। इनके प्रकृति–वर्णन में सौन्दर्य–सुधा की अतिशयता है। प्रकृति का परीक्षण ये तीव्र और सूक्ष्म दृष्टि से करती है :–

'कनक से दिन, मोती सी रात,
सुनहली सांझ, गुलाबी प्रात।
गुलालों से रवि का पथ लीप
जला पश्चिम में पहला दीप

विहँसती संध्या भरी सुहाग

दृगों से भरता स्वर्ण पराग'

में प्रकृति का बड़ा ही सुन्दर एवं रंगीन चित्रण दृष्टिगत होता है।[3]

महादेवी वर्मा जी ने प्रकृति का चित्रण विविध रूपों में किया है।

1. भावों की पृष्ठभूमि के रूप में
2. भाव के प्रतिबिम्ब के रूप में
3. आलम्बन रूप में
4. रहस्य की अभिव्यक्ति के रूप में
5. मानवीकरण के रूप में
6. प्रतीकात्मक रूप में
7. उपदेशात्मक रूप में
8. ऋतु–वर्णन[4]

महादेवी ने प्रकृति को दो रूपों में वर्णित किया है बाह्य–प्रकृति तथा अन्तः प्रकृति। बाह्य प्रकृति – जिसमें उसके रूप चित्र प्रमुख है। अन्तः प्रकृति में विभिन्न भावों, छन्दों, आदि का वर्णन किया गया है। इन्होंने अपने भावों को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त किया है क्योंकि इसके पास अपने भावों को व्यक्त करने के लिए न तो कोई सजीव व्यक्ति चरित्र था और न ही ऐतिहासिक व्यक्ति का ही जीवन वृत्त। उनके प्रकृति चित्रण के विविध रूप इस प्रकार है :–

1. भावों की पृष्ठभूमि के रूप में

'आँखों में रात बिता जब

विधु ने पीला मुख फेरा

आया फिर चित्र बनाने,

प्राची में प्रात चितेरा।

कन कन में जब छाई थी,

वह नव यौवन की लाली

मैं निर्धन तब आई ले

सपनों से भर कर डाली।'[5]

इन पंक्तियों में महादेवी ने प्रकृति चित्रों को भावों के विरोध में रखा है। यदि भावों को सीधे रखा जाता तो वे इतने प्रभावोत्पादक नहीं हो सकते थे।

2. भाव के प्रतिबिम्ब के रूप में

कवि का जैसा मन होता है वह वैसा ही प्रतिबिम्ब दिखता है। कृति में इसी प्रकार का वर्णन महादेवी वर्मा जी ने अपने गीतों में किया है। यदि उनका मन खुश है तो उन्हें प्रकृति हसंती–गाती दिखाई देती है। यदि वे अप्रसन्न है तो उन्हें प्रकृति में शोक दिखाई देता है। जैसे मेघ रोता हुआ, हिम का उर द्रवित होता हुआ प्रतीत होता है।

घुमड़ फिर क्यों रोते नव मेघ
रात बरसा आती क्यों ओस
पिघल कर हिम का उर अवदात
भरा करता सरिता के कोष[6]

3. आलम्बन रूप में

महादेवी वर्मा प्रकृति से उद्दीपन भी प्राप्त करती है और उसे ही आलम्बन मानकर अपनी भावनाओं का आरोप भी कर देती है।

मुस्काता संकेत भरा नभ
अलि क्या प्रिय आने वाले हैं?
पुलकों से भर फूल बन गये
जितने प्राणों के छाले हैं।
अलि क्या प्रिय आने वाले हैं?[7]

4. रहस्य की अभिव्यक्ति के रूप में

महादेवी जी ने मानव और मानवेतर प्रकृति की सहायता से जीव, जगत और ब्रह्म सम्बन्धी रहस्यात्मक प्रश्न सामने रखे हैं। जैसे ब्रह्म, जीव और जगत क्या है वे इनमें क्या सम्बन्ध है। इन सभी प्रश्नों का उत्तर व प्रकृति के माध्यम से ही करती है।

ब्रह्म माया के जाल में बंध गया है। वह जानता है कि वह असीम ज्योति पुंज का ही एक कण है। उसी की रूपरेखा–हीनता उसमें साकार हुई है।

'तुम असीम विस्तार ज्योति के
मैं तारक सुकुमार

तेरी रेखा रूप हीनता

है जिसमें साकार।

फिर भी वह माया के बन्धन में व्याकुल है क्योंकि वह अपने ब्रह्म से पृथक हो चुका है। संसार की हलचल उसी के कारण है। ब्रह्म से अलग हो गया है।

'चेतना से जड़ता का बन्धन

यही संसृति का हत कम्पन।'[8]

5. मानवीकरण के रूप में

प्रकृति पर चेतना का आरोप लगाना मानवीकरण कहलाता है। महादेवी ने बहुत से गीतों में प्रकृति को मानवीकरण किया है। उन्होंने प्रकृति को माँ, अभिसारिका, प्रयेसी, अवगुंठनवती नायिका, अप्सरा, प्रहरी तथा शिक्षिका आदि रूपों में देखा है। मानवीकरण के रूप में महादेवी वर्मा ने बहुत ही सुन्दर दृश्य प्रस्तुत किए है। उनमें कवयित्री के हृदय का समस्त राग, प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण और कवीश्वरी की कोमल भावनाओं का विग्रती रूप आंखों के सामने उतर आता है। जैसे–

'श्रृंगार कर लेरी सजनि।

हिम–स्नात कलियों पर जलाये

जुगुनुओं ने दीप से

ले मधुपराग समीर ने, वन पथ दिए है लीप से

गाती मुकुल के कक्ष में

मधुगीत मतवाली अलिनि।'

इन पंक्तियों ने मानवीय व्यापार योजना के साथ कवयित्री ने 'लज्जा' संचारी और पुलक तथा अवगुंठन खीचने में अनुभावों से भकित प्रकृति–नायिका का चित्र प्रस्तुत कर दिया है।[9]

6. प्रतीकात्मक रूप में

म्हादेवी वर्मा प्रकृति–चित्रण के माध्यम से प्रतीकात्मक रूप में अपने दर्शन पर प्रकाश डालती है :

'सजनि मैं उतनी करुण हूं, करुण जितनी रात!

स्जनि मैं उतनी सजल, जितनी सजल बरसात![10]

7. उपदेशात्मक रूप में

प्रकृति–वर्णन जब इस रूप में किया जाए कि उससे किसी प्रकार की शिक्षा मिले तो उसे उपदेशात्मक वर्णन कहा जाता है। महादेवी जी के गीतों में ऐसी ही भावना दिखाई देती हैं।

'न रहता भौरों का आह्वान

नहीं रहता फूलों का राज

कोकिला होती अर्न्तध्यान

चला जाता प्यारा ऋतु राज

असंभव है चिर सम्मेलन

न भूलों क्षण भंगुर जीवन

इसका मतलब है कि जगत् में कुछ शाश्वत नहीं है। झड़ते हुए फूल बसन्त का ह्रास, भौरों की गुजार, कोकिल–प्रवास यही कहा जाता है कि संसार परिवर्तनशील और क्षण भंगुर है।[11]

8. ऋतु–वर्णन

महादेवी वर्मा ने आत्माभिव्यक्ति के लिए इनको (ऋतु–वर्णन) को अपने गीतों (काव्य) में स्थान दिया है। इन्होंने वर्षा, शिशिर, बसन्त, हेमन्त और ग्रीष्म आदि ऋतुओं का अपने काव्य में वर्णन किया है। इन्होंने वर्षा का आलम्बन रूप में चित्रण किया है। आंधियों की उड़ाई हुई धूल से अंतरिक्ष भरा हुआ है। दिशाएं लू से झुलस रही है, शोभाहीन हो गई है। इन दिग्बधुओं की दशा को देखकर करूणा के रखवाले, कजरारे मतवाले बादल आकाश में छा गए। आंसू (बूंद) ही उनका शरीर है। बिजली का उनका मन है। प्राणो में निछावर होने की भावना है। उनमें मधरु गर्जन हो रही है। झंझा के झूले पर वे इधर–उधर डोल रहे है। वे ही हरित तृण पर ओस के रूप में हँस रहे हैं,

'कहाँ से आये बादल काले?

कजरारे मतवाले?

शूल भरा जग, धूल भरा नभ,

झुलसी देख दिशाएं निश्प्रभ

सागर में क्या सो न सके यह?

करूणा के रखवाले?[12]

रूपक द्वारा उन्होंने वर्षा के वातावरण की झलक सी पैदा कर दी है।

इन सभी तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि महादेवी वर्मा जी ने समस्त भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से की है। इनकी कविताओं में सीमा के बंधन में पड़ी असीम चेतना का क्रंदन है। वे न केवल साहित्य और संगीत में निपुण थी बल्कि एक कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थी। उन्हें साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है।

सन्दर्भ–सूची

1. पझ सिंह चौधरी, महादेवी साहित्य, पृ0 41
2. उपरिक्त, पृ0 42
3. डॉ0 नन्द कुमार राय, छायावाद और महादेवी, पृ0 38
4. पझ सिंह चौधरी, महादेवी साहित्य, पृ0 124
5. उपरिवत्, पृ0 125
6. उपरिवत्, पृ0 126
7. डॉ0 शिवमंगल सिंह 'सुमन', महादेवी प्रतिनिधि कविताएँ, पृ0 18
8. महादेवी, यामा, पृ0 907
9. पझ सिंह चौधरी, महोदेवी साहित्य, पृ0 132
10. डॉ0 नन्द कुमार राय, छायावाद और महादेवी, पृ0 41
11. पझ सिंह चौधरी, महादेवी साहित्य, पृ0 142
12. महादेवी, दीपशिखा, पृ0 89